मन के घाव नये न ये

लम्बी तेवरी (यमकदार तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-२०१२, मूल्य-४० रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, ईसानगर
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

मन के घाव नये न ये

लम्बी तेवरी (यमकदार तेवर-शतक)

रमेशराज

सदा न मिलती हार, सदा न रहते द्वन्द्व यूँ
ऐसे घुटना टेक ना, ऐसे घुट ना यार। १

काल न देखे काल, भाल न देखे भाल को
भीमकाय तू है भले मत गरूर कर यार। २

खल की बातें मान, बढ़ा मान किसका भला
विष में मिलकर दूध भी विष हो आखिरकार। ३

रिश्वत को लाचार, अब पूरी सरकार ही
फाइल को सरका रही, इंच-इंच दो चार। ४

दिखे विश्व-बाजार, रंग और बदरंग अब
इत में हाहाकार है, उत में हा!हा! कार! ५

फिल्मी गाने गात ,गुण्डे गोदें गात को
खून-खराबा बढ़ रहा, भारी अत्याचार। ६

लील गयी सरकार, सखी स्वदेशी काम को
बेकारी इतनी बढ़ी बेका री! घरबार। ७

नहिं महँकावै प्यार तानसेन अब तान से
जिसमें हो बस तान ही, बसता नहीं दयार। ८

धन की आज अपार, करे लूट धन्वन्तरी
फिर बाही धन बनत री कोठी बँगला कार। ९

करे शुद्ध व्यापार, जो शासन के नाम पर
मूल ब्याज बाकी लिखे, अब बा की सरकार। १०

विज्ञापन हित यार, फैशन-शो में जीतकर
बड़ी चटपटी, चट पटी नारि विश्व-बाजार। ११

घर में आखिरकार, क्लब से लौटी नारि का
हुआ आगमन, आग मन पिय के भरी अपार। १२

जीतें आखिकार, एक रहे तो युद्ध हम
मन का आज मिलान कर, मिला न कर तू यार! १३

चापलूस लाचार, युद्ध लड़ेगा क्या भला
चाटतु जो तलवा रहे उसे न दो तलवार। १४

भीषण हाहाकार, जित देखो उत पाप ही
अब तो ले अवतार तू जनता को अब तार। १५

इज्जत यूँ न उतार, तू मजदूर-गरीब की
रोजनामचा मत दिखा, रोज ना मचा रार। १६

हो जा फिर तैयार, दुश्मन से तू युद्ध को
इतना अब तै यार है, जीत बनेगी हार। १७

आज सिया-सी जान, फँसी सियासी चाल में
छल-प्रपंच सँग आज फिर रावण की हुंकार। १८

साधा रण को ध्यान, साधारण इस बात पर
'क्यों आया वह सामने मूँछ तान इस बार।' १९

कुल खोयी कुल-आन, करि दुष्कर्म कपूत ने
पिता सदा गर्वित रहे पहन मान के हार। २०

जान गयी यह जान 'साथ छोड़ तोता भगा'
माँ का स्वारथ-मोह सँग था बेटे से प्यार। २१

गति जिनका हो मान, कबहू न दुर्गति डालिए
शोभित गति का तान में पहिया और सितार। २२

मान मिलौ नहिं मान, तजि घर बसि ससुराल में
सुना कान से का न रे उसने आखिरकार। २३

मुर्गी का दरवा न, मुंसिफ का दरवान है
चोरी की चतुराइयाँ इत मूरख बेकार। २४

अर्थ-भेद नहिं जान, शब्दों में अन्तर भले
समझदार को 'ना-दिया', 'न-दिया' एक प्रकार। २५

हाथ गये पड़ ताल, गहन जाँच-पड़ताल में
लिखी दरोगा यूँ रपट अबला की भर प्यार। २६

जैसी भी हों नाल, सुख ही देंगी दुःख नहीं
छाती तक मत ला इन्हें, बस पाँवों पर वार।२७

उत डाली झट माल, जिधर माल ही माल था
देख लखपती को हुई अब की 'सिया' निसार। २८

नेता जी का जाल, नेताजी बनकर हुआ
अब तो इसके साथ हैं सारे ठग-मक्कार। २९

नेताजी का लाल, करता धरती लाल अब
जहाँ भीड़ मिलती घनी बम से करे प्रहार। ३०

नेताजी की ढाल, उस की नित रक्षा करे
नकली सिक्के ढाल वह, है करोड़पति यार। ३१

पंछी के हर हाल, पर वो पर तो नोंचता
भले न पिंजरे में रखे, भले न करे प्रहार। ३२

घर में सहज सहेज, काका अब का का रखें
बिखर रहा है आजकल पूरा ही घरबार। ३३

परमारथ का इत्र, पास रहे जिसके सदा
ता से समझौता करौ समझौ ता को यार। ३४

लीला पूरा देश, खल का लीला देखिए
ओढ़ रामनामी हुए क्या कौतुक इस बार। ३५

कर्जदार की आँख, बही न देखें क्यों बही
लाला के कारण बढ़े निर्धन-मन दुःख-भार। ३६

सोचें सत्ताधीश, कलम होय कैसे कलम
लगे खोलने नित नये घोटाले अखबार। ३७

सम्पति लिखे सिहाय, पगलायी सरकार ये
ऐसी जनगणना करे जनगण नाहिं शुमार। ३८

झट बा दल में जाय, सत्ता के बादल जिधर
हर नेता अब दल-बदल करता आखिरकार। ३९

अब का राम सिहाय, सूपनखा को देखकर
पढ़े मर्सिया, मर सिया क्यों न जाय इस बार। ४०

घर में दाम न लाय, घर को नर बेघर करे
परनारी दामन लिपट करता धन-बौछार। ४१

उत ते जित तू जाय, उत्तेजित होगा वहीं
अब तो चारों ओर है शोषण सदा बहार। ४२

ज़िन्दा चिनता बाय, यह जिसकी चिन्ता करे
सत्ता को पाकर बना नेता अति खूँख्वार। ४३

ले बन्दूक सम्हाल, 'हो न हार' यह सोचकर
नेता का सुत हर तरह 'होनहार' है यार। ४४

'बाबाजी' कहलाय, बाबा जी को लूटकर
धन पाये प्रवचन सुना, पैर छुवा हर बार। ४५

गोरी परि चित जाय, धन से परिचित हो जहाँ
इसके लिये सराय की प्रगतिशीलता सार। ४६

मुखियाजी का न्याय, देखा हमने गाँव में
'गिरजा' से 'गिरि जा' कहै अरु टपकावै लार। ४७

यह कामुक व्यवसाय जनता को अस लीलता
अब भारी अश्लीलता इण्टरनेट सवार। ४८

कहा बनै इत राय, जब 'लघुता' इतराय तो
प्रभुता के बिन मद बढै, फूलै बिना बहार। ४९

थिरकें गुरु के हाथ, नित शिष्या के बदन पर
विद्यालय में बन गयी, विद्या लय का सार। ५०

सत्ता बा नर हाथ, नित रचता उत्पात नव
इसके सँग गीदड़ चतुर बैठे पाँव पसार। ५१

गह रे! मेरा हाथ, गहरे तम के बीच तू
नव प्रकाश लाना हमें, मेंटेंगे अंधियार। ५२

झट गुण्डों के हाथ, नेता ने ता से गहे
बूथ-कैप्चरिंग हो सके छल-बल से हर बार। ५३

लिये कैमरे हाथ, आज पूछते कै मरे?
कल के हत्याकांड के जो गुण्डे सरदार। ५४

विजय-पराजय हाथ, लगे कर्म-दुष्कर्म से
जनमे जय के साथ में एक न इस संसार। ५५

लालायित इन्सान, 'धन को ला-ला इत' कहे
धन-लिप्सा का आजकल सब पर भूत सवार। ५६

हर रिश्ता अन्जान, उसके दर से हो गया
जिस दर से उसने किया अहंकार-व्यवहार। ५७

बिन कद बढ़े न मान, अगर कद रहै, कदर है
जो दधीचि-सा, कर्ण-सा उसका ही सत्कार। ५८

नतमस्तक इन्सान, नगरवधू के सामने
घर की केसर छोड़कर कुलटा के सर प्यार। ५९

हम दोनों ने कीन, अजब संग्रह संग रह
केवल दोनों ने चुने खार, खार-दर-खार। ६०

झट आँखें नम कीन, मिली नहीं नमकीन तो
लघु बिटिया ने बाप का लखा न दुःख का भार। ६१

ाल की मीठी बात, सज्जन को खलती सदा
उसी बात का दुष्टजन करते है सत्कार। ६२

झट गोरी का गात, दावत में दाबत कई
नगरवधू का कर रहे यूँ स्वागत-सत्कार। ६३

मची खलबली रात, लखि थाने में खल बली
भारी-भरकम पुलिस का काँप उठा दरबार। ६४

स्याही देगी नूर, स्याही अगर डराय तो
घने तिमिर से जूझ तू कलम हाथ ले यार। ६५

बन्धु घूर को घूर, कहो न केवल गन्दगी
यही खाद का काम भी देता आखिरकार। ६६

देता इत नासूर, वो बस इतना सूर है
लड़ै न कबहू धींग से रहै दूर ही यार। ६७

अब को रहै सहास, आँसू आँखन कोर है
धीरे-धीरे बन गया दुःख जीवन का सार। ६८

सत् ता के नहिं पास, जो सत्ता के पास है
हैं नेता के अब महज झूठ भरे उद्‌गार। ६९

नत अर्जुन के पास, जब तक रण का पास है
तब तक यह गुंजित करे नभ में धनु-टंकार। ७०

नये न ये एहसास, मन में घाव नये न ये
जीवन बीता झेलते राजनीति के वार। ७१

जो खुदगर्ज अ-नेक, ऐसे मित्र अनेक हैं
धन को लखि वन्दन करें, माया लखि सत्कार। ७२

को रे! मन नहिं मैल, कोरे-कोरे देखकर,
सबको ही इस जगत में है नोटों से प्यार। ७३

जमा बड़ा नहीं एक, भारी जहाँ जमाबड़ा
नेता सहता कब मिला गोली की बौछार। ७४

चलि उठि करि तू युद्ध, पड़ो रहैगो भूमि का?
यह कायर की भूमिका करे क्रान्ति बेकार। ७५

अब कमान ले बुद्ध, तू यश-शौर्य कमा न ले
कायरता को त्यागना होगा रे इस बार। ७६

चलो करो तुम युद्ध, आज सामना दुष्ट से
नर हो, न रहो खौफ में, हो न और लाचार। ७७

जो हो संत स्वभाव, अंतर के अंतर घटें
धन माया मद मोह मन अलगावों का सार। ७८

माखन-शहद-सुभाव, भीतर भी तर ही मिलें
इनके आस्वादन-समय बढ़े चाव हर बार। ७९

कुछ हसीन-से ख्वाब, कुछ खुशियाँ-रंगीनियाँ
रखिए का जी के लिये मदिरा खुशबूदार। ८०

पल-पल घेरें खूब, खल निर्बल को आजकल
दिखें लुटेरे हर तरफ सत्य सत्य लुटे रे यार! ८१

सह मत जता विरोध अनाचार या पाप से
अरे वधिक-जल्लाद से क्यों तू सहमत यार। ८२

झट रच डाले फूल, पेड़ बेकली क्यों रहें
जहाँ अहम् की बेकली वे बन बैठे खार। ८३

चलें न दामन थाम, जेबहि दाम न होय तो
बिन माया के मित्र अब लोगों को बेकार। ८४

मसलन.. मसल न फूल, क्यों करता ये काम तू
जग को अपना ही समझ, रह जग के अनुसार। ८५

तब समान तर नैन, मन जो हुए समान्तर
दोनों को अलगाव ने दिया दुःखों का भार। ८६

काले-काले रंग, मन को काला ही करें
धन-माया-मद-मोह तू का ले रे मन यार। ८७

जो मन हलका होय, जीवन का हल का मिले?
दुःख ही क्या अब तो दिये सुख ने कष्ट अपार। ८८

'ना रे! ना रे! बोल, अबलाएँ मिन्नत करें
नारे खोलन में सुनें गुण्डे नहीं पुकार। ८९

जिसको कहें शराब, बोतल में वो तल नहीं
माँग रह हैं भीख-सी अहले-तलब गँवार। ९०

शुभ है हत्याकाण्ड, मत हो हत या काण्ड में
बिन संशय अर्जुन करो पापमुक्त संसार। ९१

खो दी गयी सुरीति, खाई-सी खोदी गयी
घर के जब रिश्ते बँटे थर-थर काँपा प्यार। ९२

प्रीति भरे संदेश, कर हमला हम ला सके
अपहृत खुशियों को छुड़ा लाये हम इस बार। ९३

बस ताने बन्दूक, नेता उलटा हो तुरत
भाषण के हो जायँ जब अस्त्र-शस्त्र बेकार। ९४

सभी हुए खामोश, तुरत ठहाके गुम हुए
विषयों में विष यों घुला चुप सब आखिरकार। ९५

यहाँ दोश-बर-दोश, अब कोई मिलता नहीं,
मन चंचल-सा बुत हुआ साबुत रहा न प्यार। ९६

चलें जाम पर जाम 'रम्भा' सँग रम भा रही
बदचलनी के दौर में लोग हुए मक्कार। ९७

सूपनखा के संग, अब का लक्ष्मण खुश बहुत
अरी उर्मिला उर मिला रामा रहे पुकार। ९८

एक बसी आगोश, एक उर्वशी उर बसी
कबिरा अब तो साधु का चकलाघर संसार। ९९

नगरबधू की बात, आज हीर-सी, ही रसी,
रांझा लूटे मस्तियाँ कोठे पर मक्कार। १००

पापी सत्ता-ईश, अब तो सत्ताईस हैं
इनके अत्याचार पर जनता है लाचार। १०१

उधर बन्द ना जीभ, इधर वन्दना मिन्नतें,
पीट रहे हैं निबल को बलशाली कर वार। १०२

और न गरजें आप बन्धु निबल के सामने
पाप आपका आ पका कहे तेवरीकार। १०३

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं	संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है	संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है	संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी	तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,
निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़